खिवैया बाप आया इस पार से उस पार ले जाने
तुम्हारा लंगर अब उठ चुका पुरानी दुनिया से
कौड़ी से बनती आत्मा हीरे-तुल्य,बाप ऐसी जादूगरी दिखाते
बागबान बन काँटों को फूल बना देते
बाप जैसी कोई मनुष्य जादूगरी कर नही सकते
दुनिया में जिसे ढूंढ रहे वो बाबा हमें मिल गया
ऐसे बाप को याद कर वर्सा लेना,खुशी में रहना
इस रौरव नर्क को छोड़ ,अब हम जाते वैकुंठपुरी
बुद्धि में नये घर जाने की अब रखनी स्मृति
ज्ञान ,शक्तियों और खुशियों का बांटना लंगर
यह अखुट भण्डारा खुला रहे ,बांटते रहना
बंद ख़ज़ाने को चोर लूट ले जाता
जो सुनते उसे मनन कर शक्तिशाली बनो

ॐ शांति
मेरा बाबा